IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षण संस्थाओं में युवाओं के बदलते मूल्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन– आधुनिकीकरण के विशेष संदर्भ में

शोधार्थी

अंजय कुमार मिश्रा

समाजशास्त्र

सोबन सिंह जीना परिसर

अल्मोड़ा(उत्तराखण्ड)

शोध निर्देशिका

प्रो0 इला साह

समाजशास्त्र विभाग

सोबन सिंह जीना परिसर

अल्मोड़ा(उत्तराखण्ड)

शोध सारांश

आधुनिकीकरण का निर्माण आधुनिकता से हुआ है जो एक बहुआयामी जीवनशैली है और पश्चिम के अधिक उन्नत और तेजी से बदलते समाजों का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें व्यक्तियों व समाजों में विश्व के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण का उदय होता है जिसका संबंध विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों से होता है। आधुनिकीकरण स्थिर समाजों की अपेक्षा गतिशील समाजों में अधिक तीव्रता से होता है और इस सार्वभौमिक प्रक्रिया को वर्तमान में शैक्षणिक संस्थाओं में बहुतायत रूप से देखा जा सकता है।

परिवर्तन प्रकृति का अनिवार्य नियम है और युवाओं में यह गति अत्यधिक तीव्र होती है। इनमें नये अनुभवों, खुलापन, परिवर्तन, उमंग, जोश, नयी उपलब्धियों के प्रति अलगाव आदि को आसानी से देखा जा सकता है और इसके लिए आधुनिकीकरण को एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है।

शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत युवाओं में आधुनिकीकरण के प्रभाव से मूल्य किस प्रकार परिवर्तित हो रहे हैं, को जानने का प्रयास प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है।

कूट शब्द– शिक्षण संस्थाएँ, परंपरा, आधुनिकीकरण, मूल्य, युवा

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण संस्थाओं में युवाओं के बदलते हुए मूल्यों पर आधारित है। इसके लिए सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के परिसर अल्मोड़ा के बी0एफ0ए0 व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत युवाओं को लिया गया है।

"युवावस्था मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण है जिसमें वह शारीरिक, मानसिक व सामाजिक परिवर्तनों को अनुभव करता है। यह बाल्यावस्था के बाद शुरू होती है। इसमें मानसिक शिशुता के साथ ही संवेगात्मक स्थिरता आरम्भ होती है। इसे एक आश्रित बाल्यावस्था, आत्मनिर्भरता एवं संतुलित वयस्क जीवन के बीच देखा जा सकता है।"[1]

युवा व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया, परिवार, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि से होती है। यदि इसमें चारीत्रिक दृढ़ता, कर्मठता, नैतिक मूल्यों का समावेश, अनुशासन, धार्मिक एवं आध्यात्मिक आस्था विद्यमान हो तो न केवल उनका व्यक्तित्व विकास अपितु हमारा राष्ट्र भी विकसित हो सकता है। "किसी भी देश की प्रगति का जहाज युवा पीढ़ी मेहनत समर्पण और उनके अभिनव विचारों पर तैरता है। छात्र समाज प्रत्येक जगह एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। इसी कारण इसे बड़ी ताकत के रूप में मान्यता मिली है।"[2]

शिक्षा विकास, तरक्की व सशक्तिकरण के लिए प्रमुख चर है। प्राथमिक शिक्षा परिवार से प्रारंभ होने के पश्चात प्रत्येक व्यक्ति को आगे शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश की प्रक्रिया का नियम होता है। शिक्षण संस्थाएं आत्मज्ञान को विकसित करने तथा अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाने वाली समाजपयोगी प्रक्रिया है। महात्मा गाँधी जी का भी मानना था कि शिक्षा का अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जो बालक और मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा के सर्वोत्कृष्ट रूप को प्रस्तुत कर दे।[3] शिक्षा का उद्देश्य पढ़ने–लिखने तक ही सीमित नहीं होता बल्कि चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, खेल–कूद, कला, धर्म, संस्कृति जैसे विशेष गुणों व नैतिकता का होना भी आवश्यक होता है। प्राचीनकालीन शिक्षण संस्थाएं गुरूकुल एवं आश्रम व्यवस्था पर आधारित थी जहाँ गुरूओं द्वारा अपने शिष्यों को सर्वप्रथम नियम, नियंत्रण के साथ–साथ वेद वेदांग, दर्शन, नीतिशास्त्र, इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि सभी की शिक्षा देकर देश व राज्य के लिए समर्थ व सशक्त बनाया जाता था। समयापरिवर्तन के साथ शिक्षा, शैक्षणिक संस्था, गुरू–शिष्य परंपरा आदि सभी परिवर्तित हो गयी और साथ ही परंपरागत मूल्यों में भी परिवर्तन हो गया। इसके लिए आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, पाश्चात्यीकरण, नगरीकरण और आधुनिक शिक्षा को उत्तरदायी कारकों के रूप में देखा जा सकता है।

आधुनिकीकरण का निर्माण आधुनिकता से हुआ है और उत्पत्ति पाश्चात्य देशों से। यह एक ऐसी जटिल प्रक्रिया है जो परंपरागत समाजों को परिवर्तित कर वैज्ञानिक क्रांति, ज्ञानोदय, तर्क, नवीनता जैसी गुणों को विकसित करती है। "जब परंपरागत समाज आधुनिक अवस्था में आया तब आधुनिकता का जन्म हुआ।"[4] माना जाता है कि आधुनिकता की प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्तियों समूहों व समाजों में विश्व के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण और परिप्रेक्ष्य का उदय होता है जो विज्ञान व प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों से घनिष्ठ संबंध रखता है। इसी कारण परंपरागत समाजिक संरचना प्रबल रूप से प्रभावित होती है। "आधुनिकीकरण में सार्वजनिक संस्थाओं के साथ–साथ निजी आकांक्षाओं को छूती हुई प्रत्यक्षवादी भावना शामिल है।"[5] प्रो0 योगेंद्र सिंह का मानना है कि आधुनिकीकरण लाने में शिक्षण संस्थाओं की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य आधुनिकीकरण है जिसका उद्देश्य समाज में गहन गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तनों को धारण करना, उसका वर्णन व मूल्यांकन करना है।"[6]

भारत सर्वाधिक युवाओं वाला देश है जो भारत को समृद्वि व शक्तिशाली बनाने में अपना योगदान देती है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 15 से 24 वर्ष आयु के व्यक्ति को युवा माना है।[7] बात अगर भारत देश की किया जाये तो भारत की राष्ट्रीय युवा नीति ने ऐसे व्यक्ति को युवा की श्रेणी में रखा है जिनकी आयु 15 से 29 वर्ष के मध्य है।[8] "युवावस्था जीवनकाल के विकास में एक गतिशील चरण है जो किसी भी समाज की प्रगति में एक जीवनशक्ति बन सकती है। यह अवस्था उत्साह, उमंग, आशा, खुलापन, जोश, प्रेरणा तथा रचनात्मकता से भरपूर होती है।[9]

प्रस्तुत शोध पत्र में 18 से 25 वर्ष के युवाओं को इकाईयों के रूप में सम्मिलित कर शिक्षण संस्थाओं में बदलते मूल्यों को दर्शाने का प्रयास किया गया है। आधुनिकीकरण युवाओं में मूल्यों को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण चर माना जाता है। अतः यह शोध पत्र युवाओं में परिवर्तित होते मूल्यों को दर्शाने में आधुनिकीकरण की भूमिका पर केंद्रित है।

साहित्यिक पुनरावलोकन

विभिन्न विद्वानों ने आधुनिकीकरण को सामाजिक बदलाव का प्रमुख कारण माना है। समय समय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा इस बात को अपने अध्ययनों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है कि आधुनिकीकरण में सार्वजनिक संस्थाओं के साथ–साथ निजी आकांक्षाओं को छूने की भावना लोगों को नवीन तरीके से जीने के लिए प्रेरित करती है। साहित्यिक सर्वेक्षण के माध्यम से लोगों के विचारों के विचारों को निम्नवत् स्पष्ट किया गया है–

सिंगर, मिल्टन(1972) के अनुसार परंपराएं आधुनिकीकरण के मूल्यों और प्रक्रियाओं के साथ अपना अनुकूलन कर लेती हैं। अर्थात नयी अर्थव्यवस्था के परिणामस्वरूप जो भी बदलाव आते हैं उसके अनुसार परंपराएं एवं सामाजिक संस्थान दोनों ही बदल जाते हैं।[10]

सिंह, योगेन्द्र(1973) ने लिखा है कि आधुनिकीकरण लाने में शैक्षिक संस्थाओं की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य आधुनिकीकरण है जिसका उद्देश्य समाज में गहन गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तन लाने के साथ–साथ उनका वर्णन एवं मूल्यांकन करना है।[11]

सहोता, रीना(2017) ने अपने शोधपत्र The Changing Life Style of Youth: A Big Challenge to Modern India में युवाओं के मूल्यों को लेकर चिंता व्यक्त की है। उनका मानना है कि जहाँ युवा एक ओर अधिक भौतिकवादी, विलासी और आत्मकेंद्रित हो गए हैं वहीं दूसरी ओर देखा जा रहा है कि पारंपरिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों से उनकी दूरियां बढ़ती जा रही है जो मूल्यों में परिवर्तन को दर्शाती है।[12]

वर्मा, एन0पी0(2017) ने अपने शोधपत्र Cultural Dielectics and Indian Youth के माध्यम से बताने का प्रयास किया है कि पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में पड़ने के कारण युवा पारंपरिक मूल्यों से दूरी बनाते दिख रहे हैं। बुजुर्गों की सलाह उन्हें बाध्यता का चर दिखाई पड़ता है और इसके कारण पीढ़ियों के बीच संघर्ष उत्पन्न हो रहा है।[14]

देवरिया, डी0बी0(2017) के अनुसार आज की युवा पीढ़ी सामाजिक मानदण्डों को चुनौती देते हुए आत्म अभिव्यक्ति के नए रास्तों को तलाश रही है और इसका प्रमुख कारण डिजिटल मीडिया, जागरूकता, उद्यमिता की भावना, लैंगिक समानता और मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषयों पर उनके द्वारा सहभाग किया जाना है।[13]

उपरोक्त आधार पर सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय परिसर अल्मोड़ा के बी0एफ0ए0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत युवाओं में आधुनिकीकरण के प्रभाव को जानने का यह नवीन प्रयास है।

उद्देश्य

1. आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत युवाओं के बदलते मूल्यों का अध्ययन करना।
2. परिवर्तित मूल्यों से उत्पन्न समस्याओं को ज्ञात करना।

शोध प्ररचना एवं पद्यतिशास्त्र

प्रस्तुत शोधपत्र सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के परिसर अल्मोड़ा के बी0एफ0ए0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत युवाओं पर आधारित है। वर्ष 2024–25 में यहाँ अध्ययनरत युवाओं की संख्या 223 है जो अध्ययन का समग्र है। शोधपत्र में वर्णनात्मक शोध पद्यति का प्रयोग किया गया है। अध्ययनरत 223 विद्यार्थियों में छात्रों की संख्या 53 तथा छात्राओं की संख्या 170 है। शोधपत्र को वैज्ञानिक रूप देने के लिए छात्र और छात्राओं के 20–20 प्रतिशत उत्तरदाताओं को निदर्शन की लॉटरी पद्वति के माध्यम से चुनकर इकाईओं के रूप में चुना गया है। अर्थात शोधपत्र की कुल इकाईयाँ 45 हैं। प्राथमिक तथ्य के रूप में स्व–निर्मित साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वैतियक तथ्यों के रूप में संबंधित साहित्य, प्रकाशित शोधपत्र, विश्वविद्यालय के कार्यालयी अभिलेख को आधार बनाया गया है।

सर्वप्रथम उत्तरदाताओं से उनके परिवेश को जानने पर 60 प्रतिशत सर्वाधिक ग्रामीण परिवेश के युवा पाये गए और 40 प्रतिशत शहरी परिवेश के युवा पाये गए।

पूर्व शैक्षणिक संस्थाओं की तुलना में उच्च शिक्षा में पदार्पण करने पर वो स्वयं को कैसा महसूस करते हैं से संबंधित तथ्यों में 68.89 प्रतिशत ने पूर्व की स्थिति में, 28.89 प्रतिशत ने पूर्व से अधिक स्वतंत्रता की

स्थिति में होना स्वीकार किया। मात्र 2.22 प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी प्रकार के उत्तर देने में अक्षम पाये गए जिन्हें तटस्थ विकल्प में सम्मिलित किया गया है।

जिन उत्तरदाताओं ने स्वतंत्र होने की बात की स्वीकार किया, केवल उन्हीं से स्वतंत्रता का कारण पूछा गया जिसमें से सर्वाधिक 46.15 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उपस्थिति का अनिवार्य न होना, 38.46 प्रतिशत ने कक्षा में नियमित जाने की पाबंदी का अभाव तथा 7.69 प्रतिशत ने इंटरमीडिएट के समान अध्ययनों का भय न होना स्पष्ट किया।

युवाओं में निरंतर परिवर्तित होते मूल्यों के प्रमुख कारणों में मोबाईल, सोशल मीडिया, भौतिकवादिता, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव आदि अनेक अपनी अहम् भूमिका का निर्वाह करते पाये जा रहे हैं। इन साधनों के आगे सम्मान एवं भय का भाव कहीं न कहीं विलुप्त होता दिखायी पड़ रहा है।

जानने के प्रयास में कि कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा मोबाईल लाया जाता है या अध्ययन करते समय चुपचाप इसका प्रयोग किया जाता है, के उत्तर में संपूर्ण 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मोबाईल लाने की बात तो स्वीकार की लेकिन जहां तक कक्षा में इसके प्रयोग की बात थी वहां 15.55 प्रतिशत ने हाँ, 37.78 प्रतिशत ने नहीं और 46.67 प्रतिशत ने विशेष परिस्थिति में इसका उपयोग करने की बात को स्वीकार किया।

इसी आधार पर विश्वविद्यालय के प्रतिबंध पर बात करने पर संपूर्ण 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे अस्वीकार कर दिया। स्पष्ट होता है कि युवाओं का जीवन मोबाईल के साथ बंध चुका है।

इसी प्रकार कक्षा में देरी से आने की प्रतिक्रिया पर सर्वाधिक 82.22 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में अपने विचार रखे जबकि 15.56 प्रतिशत ने कभी–कभी देरी से आने व 2.22 प्रतिशत ने हमेशा देरी से आने की बात को स्वीकार करते हुए कारण के रूप में गाँव से यातायात की अनुपलब्धता को बतलाया है।

शिक्षकों द्वारा डाँटने अथवा सजा देने को अधिकतर 86.67 प्रतिशत ने नहीं और 13.33 प्रतिशत ने अपने हाँ के विकल्प के रूप में चुना। इन 13.33 प्रतिशत से सजा या डाँटने की प्रतिक्रिया जानने पर 50 प्रतिशत ने कक्षा से चले जाना, 33.33 प्रतिशत ने चुप रहने तथा 16.67 प्रतिशत ने कोई भी प्रतिक्रिया नहीं देने की बात को कहा और छात्र नेताओं से शिकायत करने का प्रतिशत इसमें शून्य पाया गया।

शिक्षण संस्थाओं में होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों की सहमति 91.11 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा दी गई जबकि 8.89 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि सांस्कृतिक गतिविधियाँ विश्वविद्यालय के माहौल की बिगाड़ने में सहायक होती है।

छात्र राजनीति के क्षेत्र में युवाओं से राजनीति को सही मानने, आंदोलनों में सहभाग करने और आंदोलनों के वास्तविक कारणों की जानने संबंधी तथ्यों में 86.67, 11.11 तथा 2.22 प्रतिशत ने क्रमशः सही, गलत व तटस्थ को विकल्प के रूप में चुना। सर्वाधिक 93.33 प्रतिशत छात्र आंदोलनों में सहभाग करने की बात को स्वीकार किया लेकिन आंदोलनो में सहभाग के वास्तविक कारणों को जानने के प्रयास करने के संबंधी तथ्यों में संपूर्ण 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बिना वास्तविक कारणों को जाने ही सहभाग किया है।

अंतिम प्रश्न के आधार पर छात्र संघ अनुशासनहीनता को बढ़ावा देते हैं, संबंधी प्रश्न के उत्तर में 73. 33 प्रतिशत ने नहीं, 17.78 प्रतिशत ने हाँ और 8.89 प्रतिशत ने पता नहीं में अपने विचार प्रकट किया।

निष्कर्ष

स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों से आए हुए युवाओं में उच्च शिक्षा में पहुँचने के बाद स्वयं को स्वतंत्र होना, कक्षा में उपस्थिति व नियमित जाने की अनिवार्यता न होना, मोबाईल का प्रयोग शिक्षकों द्वारा पढ़ाये जाने के समय करना, छात्र राजनीति में आंदोलनों के कारणों को बगैर जाने ही आंदोलन व तोड़–फोड़ करना आदि ऐसे तथ्य पाये गए जो स्पष्ट करते हैं कि युवा मूल्यों के परिवर्तन में आधुनिकीकरण का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है। जो शिक्षण संस्थाएं व शिक्षक व्यक्तित्व निर्माण, ज्ञानात्मक, विचारात्मक, क्रियात्मक एवं सृजनात्मक संस्कारों के माध्यम से युवाओं का सर्वांगीण विकास होता था, वह कहीं ना कहीं परिवर्तित होता

दिखाई पड़ रहा है। वर्तमान शिक्षण संस्थाओं में न गुरू–शिष्य जैसी परंपरा स्थिर है, न ही मान–सम्मान। इसके पीछे शिक्षण संस्थाओं में व्याप्त गंदी राजनीति, लड़ाई–झगड़ा, अभद्रता, तोड़–फोड़ आदि को उत्तरदायी कारणों के रूप में माना जा सकता है जो इस बात को स्पष्ट करता है कि शिक्षण संस्थाओं में युवा मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. पाण्डेय, संगीता, भारत में सामाजिक समस्याएं, Tata Mcgraw Hill Education, 2009, पृ0–309
2. सिंह, विवेक, हिमाचल प्रदेश में छात्र अशांति की केश स्टडी, नई दिल्ली, 2017, पृ0–130
3. महात्मा गाँधी, उद्धृरत आनंद कुमार शर्मा, भारत में शैक्षिक विकास की रूपरेखा, प्रेरणा प्रकाशन, 2011, पृ01–2
4. Lerner, Deniel: The Passing of Tradition Society, Free Press Glincoe, New York, 1964, P. 45-46
5. Singh, Yogendra: Modernization of Indian Tradition, Rawat Publication, 1973, P. 184-185
6. Singh, Yogendra: Modernization of Indian Tradition, Rawat Publication, 1973, P. 184-185
7. Secretary- General's Report to the General Assembly, A/36, 251, 1981
8. Youth in India, Ministry of Statistics and Programme, Implementation, 2022, P. 08
9. Youth, Gender and Identity, IGNOU, Unit-1, P. 12
10. Singer, Milton, When a Great Tradition Modernizes, Pall Mall Press, 1973, P. 361-363
11. Singh, Yogendra: Modernization of Indian Tradition, Rawat Publication, 1973, P. 91
12. Sahota, Reena, The Changing Life Style of Youth: A Big Challenge to Modern India, International Journal of Research Culture Society, Volume-1, Issue-10, 2017
13. Verma, N.P., Cultural Dielectics and Indian Youth, Research Review International Journal of Multidisciplinary, Volume-2, Issue-8, 2017
14. Devaraiah, D B, Youth Culture: Trends and Influence in India, International Journal of Food and Nutritional Sciences, Volume-12, Issue-1, 2023